स्वतंत्रता की ओर

धनी को पता था कि आश्रम में कोई बड़ी योजना बन रही है, पर उसे कोई कुछ न बताता। "वे सब समझते हैं कि मैं नौ साल का हूँ इसलिए मैं बुद्धू हूँ। पर मैं बुद्धू नहीं हूँ!" धनी मन ही मन बड़बड़ाया।

धनी और उसके माता-पिता, बड़ी खास जगह में रहते थे— अहमदाबाद के पास, महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम में। जहाँ पूरे भारत से लोग रहने आते थे। गांधी जी की तरह वे सब भी भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे। जब वे आश्रम में ठहरते तो चरखों पर खादी का सूत कातते, भजन गाते और गांधी जी की बातें सुनते।

साबरमती में सबको कोई न कोई काम करना होता— खाना पकाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना, कुएँ से पानी लाना, गाय और बकरियों का दूध दुहना और सब्ज़ी उगाना। धनी का काम था बिन्नी की देखभाल करना। बिन्नी, आश्रम की एक बकरी थी। धनी को अपना काम पसंद था, क्योंकि बिन्नी उसकी सबसे अच्छी दोस्त थी। धनी को उससे बातें करना अच्छा लगता था।

उस दिन सुबह, धनी बिन्नी को हरी घास खिला कर, उसके बर्तन में पानी डालते हुए

बोला, "कोई बात ज़रूर है बिन्नी! वे सब गांधी जी के कमरे में बैठकर बातें करते हैं। कोई योजना बनाई जा रही है। मैं सब समझता हूँ।"

बिन्नी ने घास चबाते हुए सिर हिलाया, जैसे कि वह धनी की बात समझ रही हो। धनी को भूख लगी। कूदती-फाँदती बिन्नी को लेकर वह रसोईघर की तरफ़ चला। उसकी माँ चूल्हा फूँक रही थीं और कमरे में धुआँ भर रहा था।

"अम्मा, क्या गांधी जी कहीं जा रहे हैं?" उसने पूछा।

खाँसते हुए माँ बोलीं, "वे सब यात्रा पर जा रहे हैं।"

"यात्रा? कहाँ जा रहे हैं?" धनी ने सवाल किया।

"समुद्र के पास कहीं। अब सवाल पूछना बंद करो और जाओ यहाँ से धनी!" अम्मा ज़रा गुस्से से बोलीं, "पहले मुझे खाना पकाने दो।"

धनी सब्ज़ी की क्यारियों की तरफ़ निकल गया जहाँ बूढ़ा बिंदा आलू खोद रहा था। "बिंदा चाचा," धनी उनके पास बैठ गया, "आप भी यात्रा पर जा रहे हैं क्या?" बिंदा ने सिर हिलाकर मना किया। उसके कुछ बोलने से पहले धनी ने उतावले होकर पूछा, "कौन जा रहे हैं? कहाँ जा रहे हैं? क्या हो रहा है?"

बिंदा ने खोदना रोक दिया और कहा, "तुम्हारे सब सवालों के जवाब दूँगा पर पहले इस बकरी को बाँधो! मेरा सारा पालक चबा रही है!"

धनी बिन्नी को खींच कर ले गया और पास के नींबू के पेड़ से बाँध दिया। फिर बिंदा ने उसे यात्रा के बारे में बताया। गांधी जी और उनके कुछ साथी गुजरात में पैदल चलते हुए, दांडी नाम की जगह पर समुद्र के पास पहुँचेंगे। गाँवों और शहरों से होते हुए पूरा महीना चलेंगे। दाँडी पहुँच कर वे नमक बनाएँगे।

"नमक?" धनी चौंक कर उठ बैठा, "नमक क्यों बनाएँगे? वह तो किसी भी दुकान से खरीदा जा सकता है।"

"हाँ, मुझे मालूम है।" बिंदा हँसा," पर महात्मा जी की एक योजना है। यह तो तुम्हें पता ही है कि वह किसी बात के विरोध में ही यात्रा करते हैं या जुलूस निकालते हैं, है न?"

"हाँ, बिल्कुल सही। मैं जानता हूँ। वे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ सत्याग्रह के जुलूस निकालते हैं जिससे कि उनके खिलाफ़ लड़ सकें और भारत स्वतंत्र हो जाए। पर नमक को लेकर विरोध क्यों कर रहे हैं? यह तो समझदारी वाली बात नहीं है।"

"बिल्कुल, धनी! क्या तुम्हें पता है कि हमें नमक पर 'कर' देना पड़ता है?"
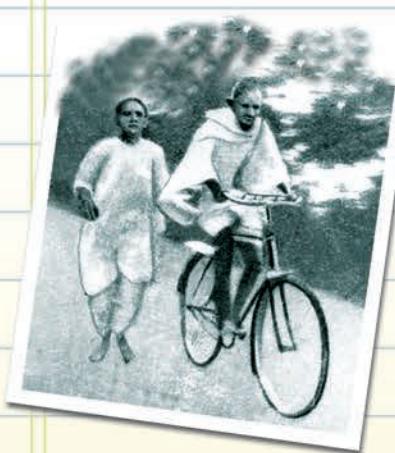
"अच्छा।" धनी हैरान रह गया।

"नमक की ज़रूरत सभी को है... इसका मतलब है कि हर भारतवासी, गरीब से गरीब भी, यह कर देता है," बिंदा चाचा ने आगे समझाया।

"लेकिन यह तो सरासर अन्याय है!" धनी की आँखों में गुस्सा था।

"हाँ, यह अन्याय है। इतना ही नहीं, भारतीय लोगों को नमक बनाने की मनाही है। महात्मा जी ने ब्रिटिश सरकार को कर हटाने को कहा पर उन्होंने यह बात ठुकरा दी। इसलिए उन्होंने निश्चय किया है कि वे दांडी चल कर जाएँगे और समुद्र के पानी से नमक बनाएँगे।"

"एक महीने तक पैदल चलेंगे!" धनी सोच कर परेशान हो रहा था। "गांधी जी तो थक जाएँगे। वे दांडी बस या ट्रेन से क्यों नहीं जा सकते?"

"क्योंकि, यदि वे इस लंबी यात्रा पर दांडी तक पैदल जाएँगे तो यह खबर फैलेगी। अखबारों में फ़ोटो
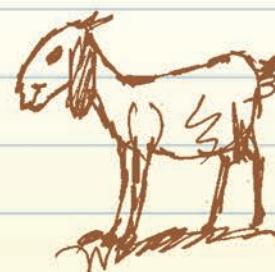
छपेंगी, रेडियो पर रिपोर्ट जाएगी! और पूरी दुनिया के लोग यह जान जाएँगे कि हम अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं। और ब्रिटिश सरकार के लिए यह बड़ी शर्म की बात होगी।"

"गांधी जी, बड़े ही अक्लमंद हैं, हैं न?" धनी की आँखें चमकीं।

बिंदा ने हँसकर कहा, "हाँ, वह तो हैं ही।"

दोपहर को जब आश्रम में थोड़ी शांति छाई, धनी अपने पिता को ढूँढ़ने निकला। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर चरखा कात रहे थे।

"पिता जी, क्या आप और अम्मा दांडी यात्रा पर जा रहे हैं?" धनी ने सीधे काम की बात पूछी।

"मैं जा रहा हूँ। तुम और अम्मा यहीं रहोगे।"

"मैं भी आपके साथ चल रहा हूँ।"

"बेकार की बात मत करो धनी! तुम इतना लंबा नहीं चल पाओगे। आश्रम के नौजवान ही जा रहे हैं।"

धनी ने हठ पकड़ ली, "मैं नौ साल का हूँ और आपसे तेज़ दौड़ सकता हूँ।"
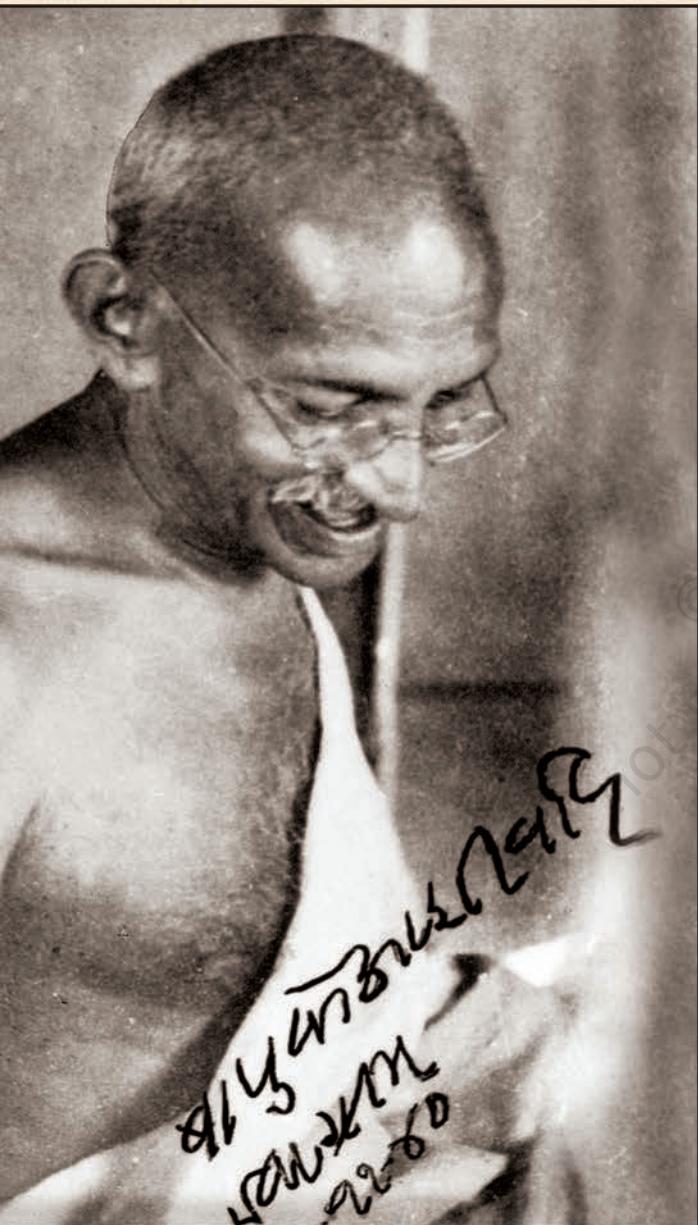
धनी के पिता ने चरखा रोक कर बड़े धीरज से समझाया, "सिर्फ़ वे लोग जाएँगे जिन्हें महात्मा जी ने खुद चुना है।"

"ठीक है! मैं उन्हीं से बात करूँगा। वह ज़रूर हाँ कहेंगे!" धनी खड़े होकर बोला और वहाँ से चल दिया।

गांधी जी बड़े व्यस्त रहते थे। उन्हें अकेले पकड़ पाना आसान नहीं था। पर धनी को वह समय मालूम था जब उन्हें बात सुनने का समय होगा–रोज़ सुबह, वह आश्रम में पैदल घूमते थे।

अगले दिन जैसे ही सूरज निकला, धनी बिस्तर छोड़कर गांधी जी को ढूँढ़ने निकला। वे गौशाला में गायों को देख रहे थे। फिर वह सब्ज़ी के बगीचे में मटर और बंदगोभी देखते हुए बिंदा से बात करने लगे। धनी और बिन्नी लगातार उनके पीछे–पीछे चल रहे थे।

अंत में, गांधी जी अपनी झोंपड़ी की ओर चले। बरामदे में चरखे के पास बैठ कर उन्होंने धनी को पुकारा, "यहाँ आओ, बेटा!"

धनी दौड़कर उनके पास पहुँचा। बिन्नी भी साथ में कूदती हुई आई।

"तुम्हारा क्या नाम है, बेटा?"

"धनी, बापू।"

"और यह तुम्हारी बकरी है?"

"जी हाँ, यह मेरी दोस्त बिन्नी है, जिसका दूध आप रोज़ सुबह पीते हैं", धनी गर्व से मुस्कराया, "मैं इसकी देखभाल करता हूँ।"

"बहुत अच्छा!" गांधी जी ने हाथ हिलाकर कहा, "अब यह बताओ धनी कि तुम और बिन्नी सुबह से मेरे पीछे क्यों घूम रहे हो?"

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था", धनी थोड़ा घबराया। "क्या मैं आपके साथ दांडी चल सकता हूँ?" हिम्मत करके उसने कह डाला।

गांधी जी मुस्कुराए, "तुम अभी छोटे हो बेटा! दांडी तो बहुत दूर है! सिर्फ़ तुम्हारे पिता जैसे नौजवान ही मेरे साथ चल पाएँगे।"

"पर आप तो नौजवान नहीं हैं", धनी बोला, "आप नहीं थक जाएँगे?"

"मैं बहुत अच्छे से चलता हूँ", गांधी जी ने कहा।

"मैं भी बहुत अच्छे से चलता हूँ", धनी भी अड़ गया।
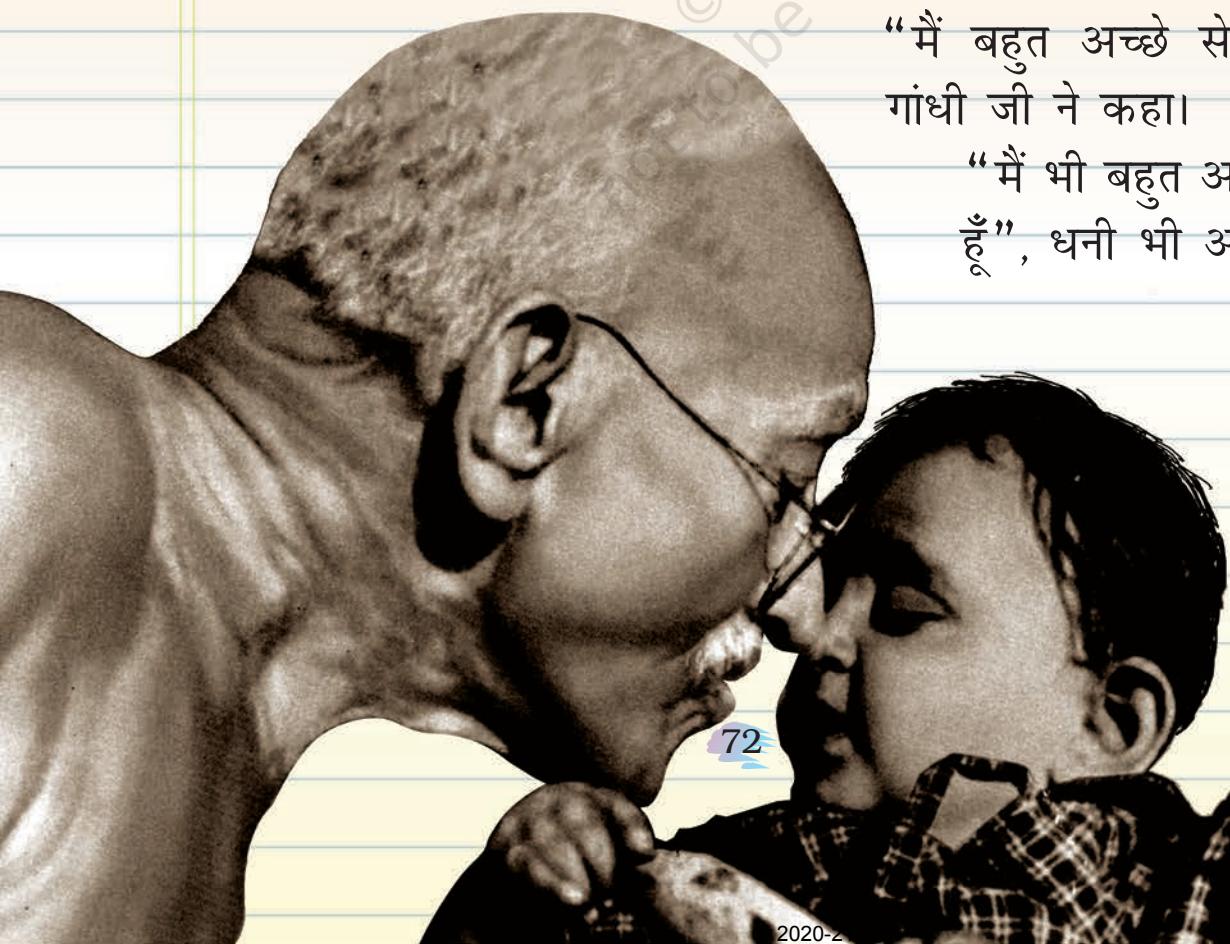
"हाँ, ठीक बात है", कुछ सोचकर गांधी जी बोले, "मगर एक समस्या है। अगर तुम मेरे साथ जाओगे तो बिन्नी को कौन देखेगा? इतना चलने के बाद, मैं तो कमज़ोर हो जाऊँगा। इसलिए, जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"

"हूँ... यह बात तो ठीक है, बिन्नी तभी खाती है, जब मैं उसे खिलाता हूँ", धनी ने प्यार से बिन्नी का सिर सहलाया, "और सिर्फ़ मैं जानता हूँ कि इसे क्या पसंद है।"

"बिल्कुल सही। तो क्या तुम आश्रम में रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे?" गांधी जी प्यार से बोले।

"जी, हाँ, करूँगा", धनी बोला, "बिन्नी और मैं आपका इंतज़ार करेंगे।"
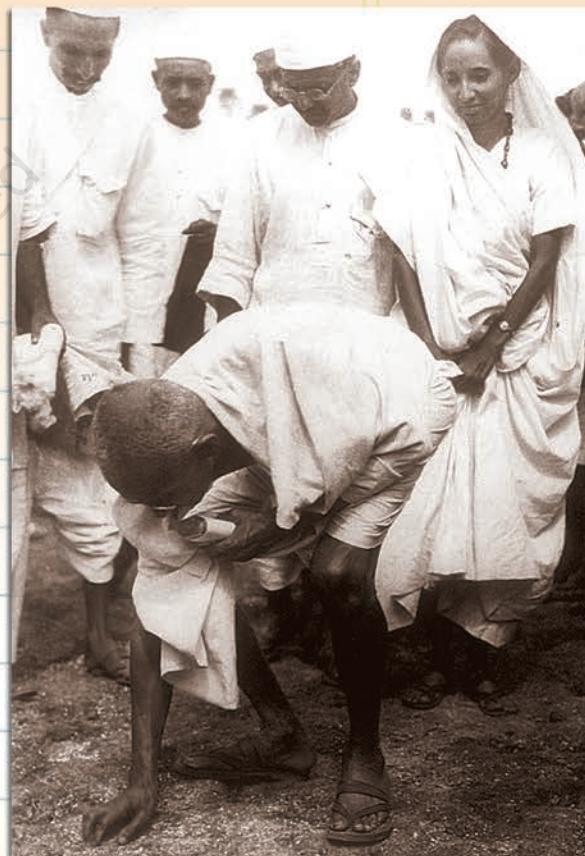
सुभद्रा सेन गुप्ता

अनुवाद–मनीषा चौधरी

प्यारे बापू

इस कहानी को पढ़कर तुम्हें बापू के बारे में कई बातें पता चली होंगी। उनमें से कोई तीन बातें यहाँ लिखो।

- ....

  ....

- ....

  ....

- ....

  ....

चूल्हा

धनी की माँ चूल्हा फूँक रही थीं।

धनी की माँ खाना पकाने के लिए चूल्हे का इस्तेमाल करती थीं। नीचे कुछ चित्र बने हैं। इनके नाम पता करो और लिखो।
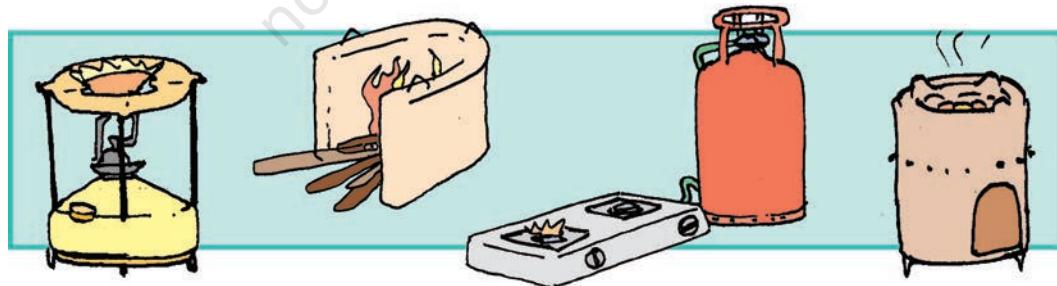
- इनमें कौन-कौन से ईंधन का इस्तेमाल किया जाता है?
- तुम्हारे घर में खाना पकाने के लिए इनमें से किसका इस्तेमाल किया जाता है?

कहानी से आगे

नीचे कहानी में आए कुछ शब्द लिखे हैं। कक्षा में चार-चार के समूह में एक-एक चीज़ के बारे में पता करो–

- स्वतंत्रता
- सत्याग्रह
- खादी
- चरखा

तुम इस काम में अपने दोस्तों से, बड़ों से, शब्दकोश या पुस्तकालय से सहायता ले सकते हो। जानकारी इकट्ठा करने के बाद कक्षा में इसके बारे में बताओ।

आगे की कहानी

गांधी जी ने धनी से कहा, "क्या तुम आश्रम में ही रहकर मेरे लिए बिन्नी की देखभाल करोगे?"

धनी ने गांधी जी की बात मान ली।

जब गांधी जी दांडी यात्रा से लौटे होंगे, तब आश्रम में क्या-क्या हुआ होगा? आगे की कहानी सोचकर लिखो।

कहानी से

(क) धनी ने गांधी जी से सुबह के समय बात करना क्यों ठीक समझा होगा?

(ख) धनी बिन्नी की देखभाल कैसे करता था?

(ग) धनी को यह कैसे महसूस हुआ होगा कि आश्रम में कोई योजना बनाई जा रही है?

कहानी और तुम

(क) धनी यात्रा पर जाने के लिए उत्सुक क्यों था?

- अगर तुम धनी की जगह होते तो क्या तुम यात्रा पर जाने की जिद करते? क्यों?

(ख) गांधी जी ने धनी को न जाने के लिए कैसे मनाया?

- क्या तुम गांधी जी के तर्क से सहमत हो? क्यों?

ताकत के लिए

गांधी जी ने कहा, "जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा, जिससे कि मेरी ताकत लौट आए।"

बताओ, खूब सारी ताकत और अच्छी सेहत के लिए तुम क्या-क्या खाओगे-पिओगे?

चटपटी अंकुरित दाल

गर्म समोसे

करारे गोलगप्पे

कुरकुरी मक्का की रोटी

खुशबूदार दाल

मसालेदार अचार

मीठा दूध

रसीला आम

गर्मागर्म साग

ठंडी आइसक्रीम

रंग-बिरंगी टॉफ़ी

ठंडा शरबत

विशेषता के शब्द

अभी तुमने जिन खाने-पीने की चीज़ों के नाम पढ़े, उनकी विशेषता बता रहे हैं ये शब्द—

चटपटी, मीठा, गर्म, ठंडा, कुरकुरी आदि

नीचे लिखी चीज़ों की विशेषता बताने वाले शब्द सोचकर लिखो—

.... हलवा .... पेड़ .... नमक .... चीटी

.... पत्थर .... कुरता .... चश्मा .... झंडा

चाँद की बिंदी

नीचे लिखे शब्दों में सही जगह पर ं या ँ लगाओ।

धुआ कुआ फूक कहा

स्वतत्र बाध मा गाव

बदगोभी इतज़ार पसद

किसकी ज़िम्मेदारी?

धनी को बिन्नी की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। इनकी क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ थीं?

- माँ
- पिता
- बिंदा

ऐसे थे बापू

पोरबंदर, यहाँ गांधी जी का जन्म हुआ था

प्राथमिक विद्यालय, राजकोट जहाँ गांधी जी पढ़ते थे।

गांधी जी, 7 साल की आयु में
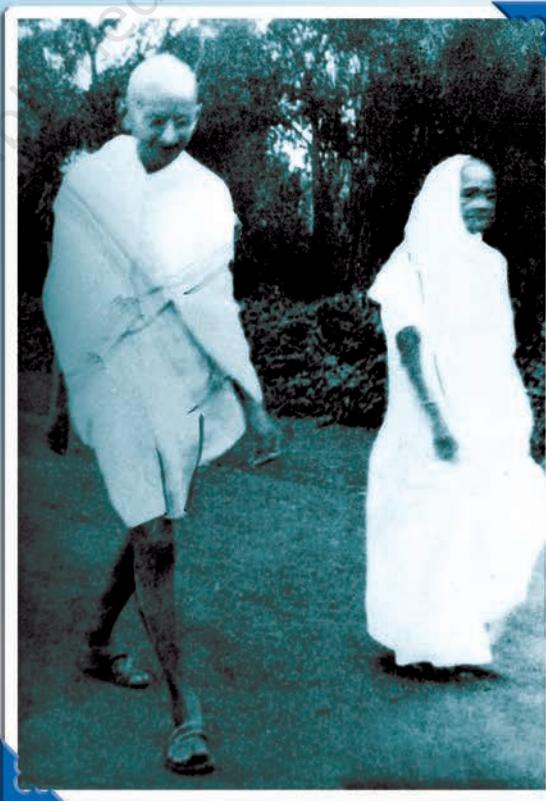
गांधी जी और कस्तूरबा सुबह सैर करते हुए
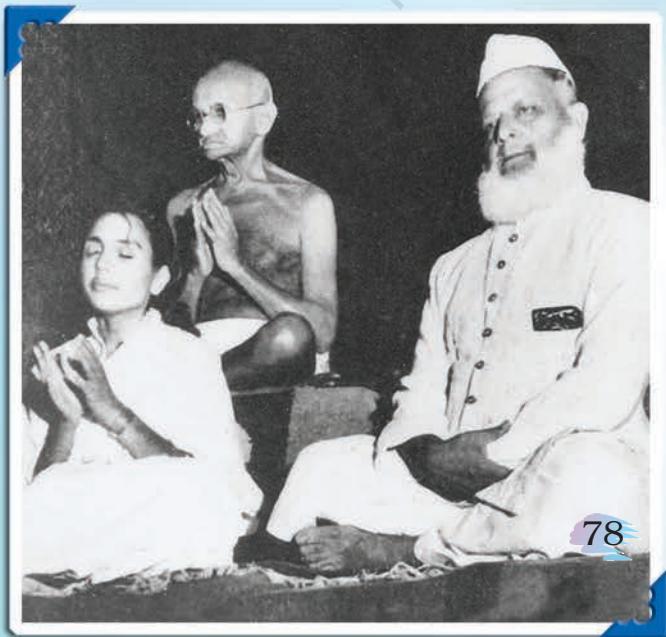
महात्मा गांधी प्रार्थना सभा में
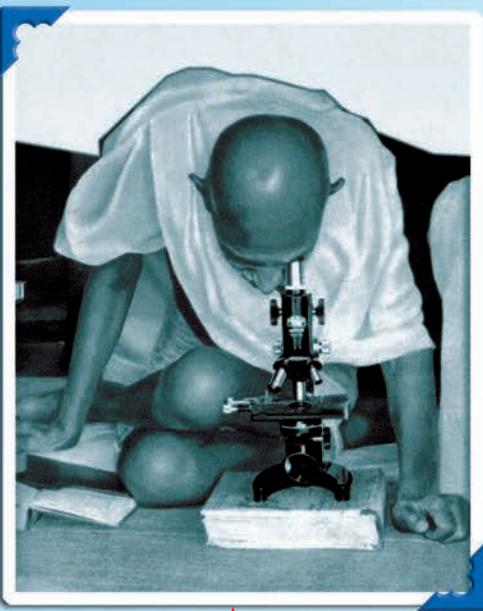
महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर, शांतिनिकेतन में (पश्चिम बंगाल)
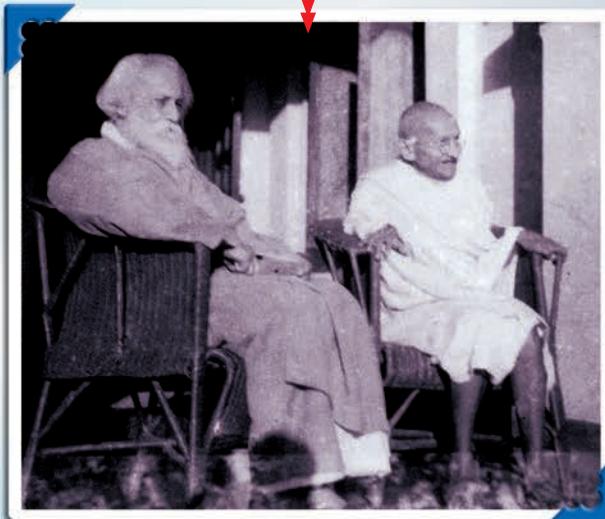
महात्मा गांधी काम करते हुए
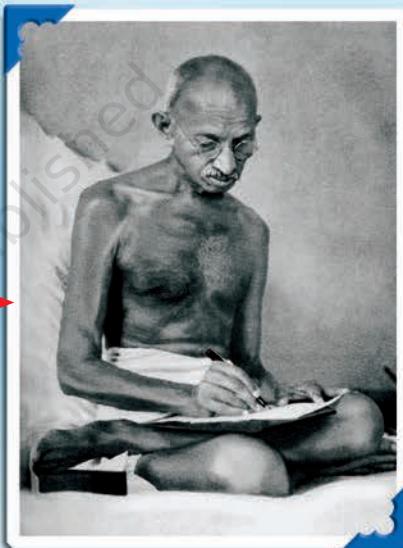
महात्मा गांधी तुलसी का पौधा लगाते हुए

महात्मा गांधी लिखते हुए

महात्मा गांधी पत्र पढ़ते हुए